Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, Jan-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मन्नू भण्डारी एवं शिवानी के उपन्यास साहित्य का सामाजिक सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

मन्नू भण्डारी एवं शिवानी के उपन्यास साहित्य का सामाजिक सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Vikas Dubey*

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ब्रजराज सिंह (पी.जी.) कॉलेज कुबेरपुर, हाथवन्त, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

----------X----------

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कथा साहित्य में चर्चित तथा प्रतिष्ठित उपन्यासकारों में मन्नू भण्डारी तथा शिवानी महिला कथाकारों के नाम उल्लेखनीय हैं। मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में जहाँ आधुनिकता के साथ लोक तत्व का उद्‌भूत हुआ है, वहीं शिवानी ने लोक जीवन में आधुनिकता पल्लवित करते हुए उपन्यास साहित्य को तुलनात्मक अधिक समृद्ध किया है। इन दोनों महिला कथाकारों ने अपने उपन्यासों में लोक जीवन के यथार्थ पक्षों भाषा, कथावस्तु, परिवेश एवं शैली में लोक तत्वों का समावेश करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। मन्नू भण्डारी ने 'महाभोज' जैसे उपन्यासों में स्वातंत्रयोत्तर ग्रामों के परवर्ती परिवेश एवं मूल्यात्मक पतन के साथ–साथ लोक जीवन के तात्विक परिवर्तन रेखांकित किया है, वहीं शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में पहाड़ी जीवन के यथार्थ को नवनूतन परिवेश में उकेरने का प्रयास किया है। जहाँ मन्नू भण्डारी का भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रतिनिधित्व करता है वहीं शिवानी ने पहाड़ी और बंगाली जीवन के लोक तत्वों तथा सामान्यजन की समस्याओं को भारतीय सामाजिक सन्दर्भों में बदलते नैतिक मूल्यों, दैनिक जीवन के प्रतिमानों एवं जीवन संघर्षों को भावबोध के साथ समाविष्ञ करने का यथासम्भव प्रयास किया है। मन्नू भण्डारी तथा शिवानी दोनों ही प्रगतिशील विचाराधारा से प्रभावित है, सम्प्रति उनके उपन्यासों के पात्र जनसम्बद्ध हैं। दोनों ही ऐसी उपन्यास प्रणेता हैं, जो अपने उपन्यासों द्वारा समाज को नई दृष्टि से समझने का प्रयास करती हैं। जहाँ मन्नू भण्डारी पर तत्कालीन सामाजिक परिवेश की अमिट छाप परिलक्षित होती है, वहाँ शिवानी नए कलेवर के साथ लोक जीवन को चित्रित करने में कोई कसर नहीं छोड़ती हैं।

मन्नू भण्डारी के उपन्यास 'महाभोज' में वर्तमान राजनीतिक सन्दर्भ विशेषकर राजनीति के दावपेचों को दर्शाकर राजनीति का उद्‌देश्य सत्ता पर कब्जा करके आमजन को निरीह बना देना प्रतीत होता है तो शिवानी के उपन्यास साहित्य में विशेषतः 'मरण सागर पारे' और 'श्मशान चंपा' में जनजीवन की विडम्बनाओं को उजागर करने की मंशा परिलक्षित होती है।

मन्नू भण्डारी एवं शिवानी दोनों ने ही उपन्यासों में नए प्रयोगों पर बल देने की कोशिश की है परन्तु उन दोनों के वैचारिक चिन्तन पर जन सामान्य की समस्याएँ हाबी रही हैं फिर भी दोनों रचनाकारों के कथानक लोकतत्व को समेटते हुए, उनके उपन्यासों के संवाद, लोक जीवन चित्र प्रस्तुत करते हुए पात्र सृष्टि नवीन जीवन प्रतिमानों तथा आधुनिकता से आबद्ध है। दोनों ही उपन्यासकारों की रचनाओं में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जनजीवन की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है क्योंकि दोनों के ही उपन्यासों में प्रायः सभी पात्रों के चरित्र दैनिक जीवन के मानसिक द्वन्द्व तथा संघर्ष से परिपूर्ण लोकतत्व को समाहित किए हुए हैं और यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो उपन्यासकार मन्नू भण्डारी का कथानक, समूचे देश का प्रतिनिधित्व करता है जबकि शिवानी का कथानक मौलिक रूप से बंगाली तथा पहाड़ी लोक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है विशेष रूप से दोनों कथाकारों के उपन्यासों की पात्र परिकल्पना में लोक जीवन की भूमिका अहम रही है जो कि वैशिष्ट्य लोक से सम्बद्ध है, और पात्र लोक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं, और रचनाएँ समकालीन जनजीवन की समस्याओं को रेखांकित करती हैं।

सामान्यतः 'संवाद योजना' किसी भी औपन्यासिक रचना का आधार मानी जाती हैं। पात्रों में पारस्परिक समंजन और कथासूत्र को जोड़ने का विशेष महत्व होता है, इस दृष्टि से दोनों के उपन्यासों में पात्र संवादों ने महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर लोक जीवन की व्याख्या करते हुए सार्थक संवाद सृष्टि की सर्जना की है, किसी भी उपन्यास की भाषा शैली उसके महत्व तथा सार्थकता को चरितार्थ करती है। मन्नू भण्डारी और शिवानी के लेखन का प्रयोजन मूलतः लोक जीवन की समस्याओं की विवेचना करना रहा है, यही कारण है कि दोनों की कृतियों में जिस भाषा शैली का प्रयोग किया गया है, वह सामान्य जन समुदाय की है जो लोक जीवन से सम्बद्ध लोकोक्तियों मुहावरों तथा स्थानीय डाइलैक्ट की विशेषताओं से परिपूर्ण है।

दोनों ही उपन्यासकारों की रचनाओं के लेखन का एकमात्र उद्‌देश्य लोक जीवन की समस्याओं को उजागर करना और उनकी समस्याओं की ओर जनसामान्य का ध्यान आकृष्ट करना रहा है, शोध अध्येता की दृष्टि से दोनों ही अपने उद्‌देश्यों की प्राप्ति में सफल हुई हैं। मन्नू भण्डारी एवं शिवानी के लेखन का उद्‌देश्य लोक जीवन की सामाजिक राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक सत्यान्वेषी स्वाभाविक समस्याओं को रेखांकित करना रहा है। मन्नू जी को सर्वप्रथम कहानियों के लेखन से भी ख्याति हुई जिनमें 'मैं हार गयी' ईसा के घर इन्सान, गीत का चुम्बन, जीतीबाजी की हार, एक कमजोर लड़की की कहानी,

www.ignited.in

अभिनेता श्मशान चम्पा, सयानी बुआ, दीवार बच्चे और बरसात, कील और कसक, मैं हार गयी, तीन निगाहों की तस्वीर, आँखों देखा झूठ, अकेली आदि कुछ चुनी हुई कहानियाँ रहीं। आपकी कहानियों का उद्देश्य नारी हृदय की कोमलता, अछूती भावनाओं की मार्मिक अभिव्यंजना तथा जीवन व जगत के व्यापक क्षेत्र में घटित होने वाली विविध घटनाओं का चित्रांकन करना है। आपके हिन्दी उपन्यासों की समृद्धि में कहानी लेखन का उल्लेखनीय योग रहा। आपकी प्रथम औपन्यासिक कृति 'एक इंच मुस्कान' है, और 'आपका बंटी' सर्वप्रथम ख्याति प्रदान करने वाला स्वतन्त्र उपन्यास 'आपका बंटी' हमारे समक्ष एक ऐसा उपन्यास है जो आधुनिक युग के लिए एक चुनौती बनकर खड़ा है ..... किन्तु 'महाभोज' उपन्यास और भी अधिक बढ़कर है।

गौरापन्त शिवानी हिन्दी कथा साहित्य सरोवर का प्रफुल्लित प्रसून है, वहीं दैदीप्यमान नक्षत्र है, जिनका प्रदेय हिन्दी उपन्यास और कहानी साहित्य को अहम योगदान भी है। आपके लघु उपन्यासों में विषकन्या, कैंजा, रति विलाप, स्वयंसिद्धा, गेंडा, माणिक, कृष्णवदी, विवर्त्त, तीसरा बेटा, पूतों वाली, बदला तथा कस्तूरी मृग और दीर्घ उपन्यासों में मायापुरी, चौदह फेरे, भैरवी, कृष्णकली, श्मशान, चम्पा, सुरम्मा एवं अतिथि हैं। जिनमें मायापुरी आपका प्रसिद्ध उपन्यास है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिवानी की प्रशंसा करते हुए 'कुछ विचार' में लिखा है कि : ''यह आश्चर्य की बात है कि आश्रम में पली–पोषी एक छात्रा सबसे आगे बढ़कर बाजी मार ले गयी, और प्रतिष्ठित कहे जाने वाले लेखक पिछड़ गए।''

प्रकारान्तर से देखा जाये तो मन्नू भण्डारी एवं शिवानी की रचनाएँ उद्देश्यपूर्ण हैं, और लोक जीवन की समस्याओं तथा लोकतत्व को समाहित किए हुए हैं। निष्कर्षतः –

1. दोनों ही उपन्यासकारों की रचनाओं में लोक जीवन की समस्याओं को उकेरने का सार्थक प्रयास किया है।

2. लोकतत्व से आशय सामान्य जनजीवन या जनसामान्य से है। प्रकारान्तर से कहें तो लोक साहित्य का अभिप्राय ऐसे साहित्य से है जो लोकचित्त से सीधे उत्पन्न होकर जनसामान्य को प्रभावित करते हुए अन्तः स्थल को छूता है।

3. दोनों रचनाकारों की औपान्यासिक कृतियाँ लोकजीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनमें जनजीवन के संघर्षों व समस्याओं से सम्बन्धित झलक से सम्बद्ध है।

4. 'पात्र–सृष्टि' लोकतत्व की पात्र संयोजन में स्थान दोनों ही रचनाकारों के उपन्यासों में झलकती है।

5. दोनों के उपन्यासों में संवाद अत्यन्त रोचक तथा लयमय हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि 'संवाद' कथासूत्र को विस्तार प्रदान करते हैं और उद्देश्य तक पहुँचने में सहायक की भूमिका–निर्वहन करते हैं।

6. 'भाषा–शैली का प्रयोग' विषयानुकूल होने के कारण उपन्यास की श्रीवृद्धि में गुणात्मक योग देता है। दोनों के ही उपन्यासों में भाषा शैली का प्रयोग 'लोकल डायलैक्ट' आधारित है। उपन्यासों में लोक–प्रचलित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग और भी अधिक उपन्यासों को रूचिकर बनाता है।

7. मन्नू भण्डारी की कृतियों का उद्देश्य, समूचे देश की जनसामान्य की समस्याओं को उभारने तक केन्द्रित रहा है, वहीं शिवानी के उपन्यासों का मौलिक उद्देश्य पहाड़ी एवं बंगाली जन समुदाय की समस्याओं को उभारना रहा है, ऐसी झलक प्रतीत होती है।

निष्कर्ष बतौर मन्नू भण्डारी एवं शिवानी दोनों ही अतुलनीय सशक्त रचनाकार हैं और उनका समूचा संसार, लोकतत्व को समाहित किए हुए हैं जो भारतीय जन जीवन की विसंगतियों तथा समस्याओं की विवेचना करना मौलिक प्रयोजन रहा है।

Corresponding Author

Dr. Vikas Dubey*

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ब्रजराज सिंह (पी.जी.) कॉलेज कुबेरपुर, हाथवन्त, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

E-Mail – vikasdubey281@gmail.com